ज्ञानविविधा
रचना, आलोचना और शोध की त्रैमासिक पत्रिका

Online ISSN : 3048-4537
April-June, 2024 : 1(3)28-31
©2024 Gyanvividha
www.gyanvividha.com

डॉ. कृष्ण कुमार
सहायक आचार्य, हिन्दी
गुरु काशी विश्वविद्यालय,
तलवंडी साबो (बठिंडा) पंजाब

Corresponding Author :
डॉ. कृष्ण कुमार
सहायक आचार्य, हिन्दी
गुरु काशी विश्वविद्यालय,
तलवंडी साबो (बठिंडा) पंजाब

चित्रा मुद्गल के कथा साहित्य में त्रासदी एवं छटपटाहट

सारांश: वैश्वीकरण एवं भौतिकता ने हमारी आर्थिक व्यवस्था को अत्यधिक प्रभावित किया है। औद्योगिकरण के कारण आर्थिक विषमता ने जोर पकड़ा एवं समाज में शोषण और धोखे का साम्राज्य पनपने लगा। स्वार्थी प्रवृत्ति एवं व्यक्तिगत हित के कारण अर्थमूलक संस्कृति मानव के हर क्षेत्र में आर्थिक असमानता को जन्म देती गई। बाजारवाद एवं निजीकरण ने व्यक्ति को आत्महित केंद्रित कर दिया है। किसी भी कार्य को करने के लिए धन अवश्य हो गया है। आर्थिक अभाव में मानवीय अस्तित्व संकट में हो सकता है। समय की बहती धारा के साथ-साथ औद्योगिकरण के कारण छोटे-मोटे उद्योग-धंधे खत्म हो गए और श्रमिक की जगह मशीनों ने लेनी शुरू कर दी। बड़े-बड़े उद्योग धंधे बड़े शहरों में लगाए गए। वहां श्रमिकों की कठिन मेहनत के बावजूद भी उनका गुजारा होना मुश्किल हो गया एवं श्रमिकों के रहन-सहन के स्तर में दिन-प्रतिदिन गिरावट आने लगी। वह खुद को अजनबी, अकेला एवं असुरक्षित अनुभव करने लगा। जिसके कारण श्रमिक आर्थिक संकटों से गुजरने लगा।

मूल शब्द: कथा साहित्य, समाज, छटपटाहट, संघर्ष, चिंता, मानसिक, अकेला

मूल आलेख: एक कथाकार समाज में रहते हुए अपने कथा साहित्य का सृजन करता है। वह समाज के तलछट की सच्चाईयों के नग्न यथार्थ को अपने कथा साहित्य के माध्यम बनाता है। कोई भी पहलू चाहे वह सकारात्मक हो, चाहे नकारात्मक, उसकी आंखों से ओझल नहीं हो सकता। लेखिका निम्न वर्ग एवं समाज की सशक्त एवं प्रतिनिधि रचनाकार है। भूखमरी, अभावग्रस्ता, लाचार व्यक्ति की त्रासदी एवं असमानताओं की सूची भी कम लंबी नहीं है। समाज का उच्च वर्ग ऊंचे से ऊंचा होता चला जाता है। यह बिसरा ही गया है कि पूंजी के विस्तार में निम्न वर्ग की मुख्य भूमिका रही है। लेखिका का कथा साहित्य समाज के धरातल पर अत्यंत चिंताजनक है। कथाकार का उद्देश्य मनुष्य के मनुष्यत्व के स्तर को गिराना नहीं अपितु उठाना है।

शांत और चुंबकीय व्यक्तित्व की धनी चित्रा मुद्गल ने समकालीन सामाजिक व्यवस्था के प्रत्येक क्षेत्र में व्यापक दूषित भावनाओं के कारण तीव्र आक्रोश आक्रोश प्रकट किया है। स्वतंत्रता के पश्चात सामाजिक व्यवस्था में संकीर्णता, स्वार्थपरकता, अस्पृश्यता, लिंग-भेद, रूढ़िवादिता, अन्याय, हत्या एवं बेईमानी में वृद्धि हुई है। इन सभी दूषित भावनाओं के कारण मूल्यहीनता आई है, जिनके प्रति लेखिका श्रीमती चित्रा मुद्गल ने आक्रोश प्रकट किया है। आम व्यक्ति के व्यवहार से आक्रोश एवं असंतोष पनप रहा है।

लेखिका ने 'स्टेपनी' कहानी में विनोद और आभा के बीच पति-पत्नी के रिश्तों में त्रासदी एवं छटपटाहट को उजागर किया गया है। अपनी पत्नी से बच्चों की देखभाल और नौकरी के अलावा शारीरिक सुख की कामना करता है, लेकिन सब होते हुए भी पत्नी द्वारा कमी रह जाने पर वह शारीरिक सुख को बाहर पूरा करता है। आभा को नौकरी के साथ-साथ बच्चों एवं घर को भी संभालना पड़ता है। ऑफिस में उसे बॉस के साथ संघर्ष करना पड़ता है तो घर में पति के साथ। "..... नहीं सोचते कि नौकरी और गृहस्थी के बीच पोर-पोर पिसती हुई देह कहां से इतनी सामथ्र्य लाए कि प्रतिदिन उन्हें संतुष्ट कर सके।"1 दोनों स्थानों पर उसे उपभोग की वस्तु समझा जाता है जिसमें वह संघर्ष करती रहती है। विनोद अपनी पत्नी से शारीरिक संतुष्ट न हो पाने के कारण काम करने वाली बाइयों से शारीरिक संबंध बनाता है जो उसके पारिवारिक सदस्यों एवं विघटन का कारण बनते हैं। अतः इस प्रकार पारिवारिक त्रासदी एवं छटपटाहट के कारण रिश्तों में खटास आ रही है। माता-पिता अपना कर्तव्य निर्वहन नहीं कर पा रहे है। फलस्वरूप परिवारों में बिखराव उत्पन हो रहा है एवं जीवन नर्क तुल्य बनता जा रहा है।

लेखिका की 'ब्लेड' कहानी में ब्लेड मानवीयता को झकझोरने का प्रतीक है। कहानी में रामखिलावन पर मां, पत्नी एवं पुत्री के साथ-साथ विधवा भाभी की भी जिम्मेवारी है। वह सेठ के यहां ड्राइवर के तौर पर ईमानदारी से अपना कर्तव्य निभाता है। उसकी जिंदगी में अचानक खलबली तब मच जाती है, जब गांव से उसकी पत्नी का पत्र आता है, "मौड़ी की बाई टांग की हड्डी टूटि गई है, जे गांव के बिसेसर डॉक्टर को कहनौ है कि इलाज उनके वश का नाय. मालिश-मूलिश से हड्डी नहीं बैठने वारी। सही इलाज तो आगरा में ही होई सकतु है। बिसेसर डॉक्टर ने जिला अस्पताल के हड्डी के बड़े डॉक्टर के नाम मोको चिट्ठी दई है। बाको कहनौ है कि टांग पै दांच-फांच के बाद पलस्तर चढ़ेगो सो प्रीवेट करवाने से इलाज अच्छो होइगो। अब खर्च-पानी जो लगेगो सो लगेगो।"2 रामखिलावन को बेटी के इलाज के लिए काफी रुपया चाहिए। सेठ उसकी परेशानी को नहीं समझता और गुस्से से कहता है, "कारण तुम छोटे-मोटे नहीं गढ़ते हो, हूं ! कभी तुम्हारा बैल मर जाता है, कभी मां की आंखों का ऑपरेशन होता है। कभी बीज के बिना खेतों की बुवाई रुकने लगती है तो कभी बेटी की टांग टूट जाती है....यह बताओ, मेरे यहां पैसों की खान खुली है कि जब भी तुम्हारा मुंह खुलेगा, फौरन निकालकर थमा दूंगा। पैसे पूरे लेते हो, हारी-बीमारी के लिए बचा-बुचूकर क्यों नहीं रखते ? तुम्हारे इन्हीं लफड़ों के चलते मैं अब तक गाड़ी के जरूरी काम नहीं करवा पाया।"3 इस प्रकार सेठ ड्राइवर की भावनाओं एवं मजबूरियों को नहीं समझता और अपनी गाड़ी का काम करवाने के लिए रामखिलावन को भेजता है। निम्न वर्ग की मुश्किलें एंव मजबूरियां उन्हें अत्यंत लज्जित करती है, जब रामखिलावन को शोषित एंव प्रताड़ित होना पड़ता है। इतनी छोटी-सी बच्ची के इलाज से ज्यादा महत्व अपनी गाड़ी का काम करवाने को दिया। समाज में उच्च वर्ग का घिनौना एवं निर्दयी व्यवहार समाज में निम्न वर्ग को गिड़गिड़ाने एंव संघर्ष करने पर मजबूर कर देता है। परेशान होकर रामखिलावन ब्लेड से गाड़ी के सीट कवर फाड़ देता है।

लेखिका की 'पाली का आदमी' कहानी में रवि पालियों में काम करता है। इस दौरान उसे त्रासदी एवं छटपटाहट का सामना करना पड़ता है। "अंतर्जगत के तुपे गलियारों के कपाट कभी खुलते नहीं। कोई दस्तक उन्हें खोल दे तो.....निर्मम, कैसे अजगर की आंत-से लीलने को आतुर हो उठते हैं। लल्ली ने क्यों दस्तक दी ? यह पत्र उसके शुरुआती अनगढ़ पत्रों से एकदम अलग है-उसकी गैंडे की खाल-सी हो आई चमड़ी को अपने कोमल-करुण स्पर्श से स्पर्शित करता हुआ। वह अपना ध्यान चाह कर भी नहीं हटा पा रहा।.....प्यार, आशीर्वाद ब्याह, रुपये, उफ् ! अचानक वह पीड़ा से तिलमिला उठा।.....महीने-भर की तालाबंदी के पश्चात खुली फैक्ट्री का कामकाज वैसे भी अब तक पटरी पर नहीं आया। पटरी पर लाने के लिए सुस्ताए मजदूरों को चुस्ती और संलग्नता की सान पर खींच-खांच पहुंचाना

उसका काम है। वह उत्पादन प्रबंधक के पद पर है। उत्पादन की पूरी जिम्मेवारी उसके कंधों पर है। परसों हुई मंत्रणा में जोली साहब (मालिक) की एक ही रट लगी हुई थी-उत्पादन में बढ़ोतरी। वरना वे सब जानते हैं कि प्लांट बंद करने का इरादा वे बना चुके थे।"[4] इस प्रकार यदि उसने उत्पादन नहीं बढ़ाया तो मालिक फैक्ट्री बंद करने को तैयार हैं। इस कारण वह बहुत घबराया हुआ है।

उपन्यास 'गिलिगडु' में बाबू जसवंत सिंह अपने बेटे नरेंद्र के साथ रहते हैं उनके पुत्र एवं पुत्रवधू को उनके साथ खुशी बांटने या बात करने का समय नहीं है। बाबू जसवंत सिंह उदास हो गए है। उन्हें मालूम है कि गलती बच्चों की नहीं, बल्कि उन्हें खुद तक सीमित रहना सिखाया जाता है। इसी कारण बुजुर्ग ने अपने पोते (मलय-निलय) को कभी मेकनिक्स, पजल्स, खेल ब्लॉक भेंट नहीं किए। उन्हें अपना बेटा तब बहुत विचित्र लगता है, जब वह मलय-निलय के लिए बिना मांगे खिलौने लाते हैं। बच्चे इन्हीं खिलौनों में व्यस्त रहते हैं। बच्चों को मोहल्ले के बच्चों के साथ खेलने में कोई दिलचस्पी नहीं होती। खिलौने में भी बेटे और बहू को षड्यंत्र की बू आती है।

जसवंत सिंह की बेटी का फोन आने पर मालूम हुआ कि उसका बेटा नरेंद्र अमेरिका जा रहा है। वह उसे वृद्धाश्रम छोड़ने जा रहा है। जसवंत सिंह के मन में ख्याल आया कि बेटा नहीं तो बेटी उसका संरक्षण क्यों करेगी ? उसने दोनों का पालन-पोषण एक ही ढंग से किया है। उसकी बेटी ने कहा कि मां के गहने बेटी के लिए है। कहने का आशय है कि स्वार्थ से प्रेरित नई पीढ़ी आगामी पीढ़ी को भी बर्बाद कर रही है। जिससे आज की पीढ़ी का भविष्य खतरे में डाल दिया है।

पुरानी पीढ़ी आजीवन जिस परिवार एवं संतानों के लिए अपना सर्वस्व स्वाहा कर देते हैं। उनकी उपेक्षा करने से नई पीढ़ी और पुरानी पीढ़ी में टकराव की स्थिति पैदा हो जाती है सरकार की ओर से पुरानी पीढ़ी की रक्षा को ध्यान में रखते हुए कानून बनाया गया है, लेकिन कानूनन लड़ाई लड़ने के लिए उन्हें बहुत त्रासदी एवं छटपटाहट का सामना करना पड़ता है।

लेखिका के 'आवां' उपन्यास में अशोक एंव गौतमी के माध्यम से पारिवारिक त्रासदी एवं छटपटाहट को चित्रित किया गया है। दोनों में एक-दूसरे के प्रति विश्वास, समर्पण की कमी है, जो पति-पत्नी के रिश्ते में बहुत ही जरूरी है। "पति क्या होता है आधिकारिक बलात्कारी ! अथोराइज्ड.....मैंने अशोक को उस अधिकार से वंचित रखा है कि जब मन किया, बीवी सो रही हो, जग रही हो, काम में व्यस्त हो, मरजी हो, न हो-उठाकर बिस्तर पर पटक लिया..."[5] अतः रिश्तों में आकर्षण, समर्पण, विश्वास आदि भावों के द्वारा सांमजस्य स्थापित होता है। पति-पत्नी एक-दूसरे को केवल वस्तु समझकर प्रयोग करते हुए पारिवारिक संघर्षो को करते नजर आते हैं। प्रेम एवं विश्वास पारिवारिक संबंधों में जरूरी है। इसके अभाव में रिश्तों की डोरी कच्ची मानी जाती है। हर संबंध में फर्ज एवं कर्तव्य की सफलता की कामना की जाती है। भारतीय संस्कृति में मधुर पारिवारिक संबंधों का वर्णन होता है, जिसको चित्रा मुद्गल ने गंभीरता से उठाया है। प्राचीन समय से लेकर वर्तमान समय एवं ग्रामीण से लेकर शहरी वातावरण की प्रत्येक स्थिति को लेखिका ने उजागर किया है।

इसी प्रकार 'पोस्ट बॉक्स नं. 203 नालासोपारा' का पात्र विनोद उर्फ बिन्नी अकेलेपन की पीड़ा का सामना करता है। अपने घर के सदस्यों से दूर रहकर मछली की तरह तड़पता रहता है। उसे हर वक्त घर की याद सताती रहती है। "मैं नहीं जानता कि मैं अभिशापग्रस्त हूं। तू क्यों सोचती है कि तू कहीं अभिशप्त तो नहीं ? मत सोच ऐसा। बीते 6 वर्षों तक में घंटे के प्रति चक्क था। अविश्वास से भरा हुआ। अविश्वास विश्वास को कभी गुंजाइश ही नहीं देता पनपने के लिए, लेकिन जब से तेरी आवाज सुनी है, चिट्ठी पत्री की चैखटे खुली है। नर्क का दल-दल सूखता हुआ महसूस हो रहा है।"[6]

लेखिका ने 'एक जमीन अपनी' उपन्यास के जरिए भारतीय संदर्भ में धर्म, जाति, परंपरा एवं मान्यताओं को तोड़ते हुए अंकिता अपने प्रेमी सुधांशु से विवाह करती है। उसके मायके परिवार वाले उसे माफ नहीं करते। उसका ससुराल पक्ष भी उसे सदा प्रताड़ित करता रहता है कि उनके लड़के को उसने प्रेमजाल में फंसाकर उसके भविष्य के साथ खिलवाड़ किया है। उसके पति का अप्रत्याशित निरंकुश से व्यवहार उसे भीतर से झकझोर कर डालता है। अंकिता को अपने पति के साथ तीन साल रहने के बाद आभास हुआ कि कुछ लोग दूर से ही अच्छे प्रतीत होते हैं। उसके पति का निरंकुश व्यवहार उसे जीने नहीं देता। उसका पति सुधांशु स्वामित्व के घमंड में लिप्त हुआ कहता है, "यह मेरा घर है.....यहां तख्ती वही लटकेगी जैसी मैं चांहूगा।"[7] यह सुधांशु का अपनी पत्नी के अस्तित्व पर नहीं, बल्कि

उसकी उम्मीदों को भी खत्म करने वाला अनुशासन है। अंकिता एक ही छत के नीचे दोहरी मानसिकता में जीने से मुक्त होना चाहती है। जो उसके लिए असहनीय है। अंकिता जीवन में आई चुनौतियों से घबराती नहीं, बल्कि उनका मुकाबला कर अदम्य साहस से उन पर विजय पाना चाहती है।

इसी तरह 'नकटौरा' उपन्यास में मृनाल को भी आर्थिक संकटों का सामना करना पड़ता है। जब स. ब. को अपनी परेशानी मृनाल से बांटने को कहती है तो वह कहता है, "आए दिन राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय फिल्म समारोह और सेमिनारों में शिरकत करने हेतु उनका एक पांव हवाई जहाज में टिका होता है, जाते जरूर है वे, लेकिन सरकारी या विदेशी खर्चे पर। अपने घर-गृहस्थी, रिश्ते-नातेदारी का प्रबंधन बउदी (भाभी) कैसे चलाती-निभाती है, सामंजस्य बिठाती है, मृणाल दा को उससे कोई मतलब नहीं होता, जबकि बऊदी स्वयं मंजी हुई अभिनेत्री हैं। वह कैसे कह सकता है? तुम बोलोगे नहीं और उनके घर की बिजली कटती नहीं। उनके घर का समान बकाया किराया न देने पर मकान मालिक उठवाकर सड़क पर नहीं फिंकवा देता। रसोई हुई भात-दाल कम नहीं पड़ती। फीस न भरने पर बच्चों को स्कूल से निकाल नहीं दिया जाता।"[8] इस प्रकार जो फिल्म निर्देशक फिल्मों में चित्र खींचते हैं। वैसे ही अभावों में पीड़ा स्वयं भी अनुभव करनी पड़ती है। इस प्रकार अर्थ के बिना सुखमय जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती। अर्थ के आधार पर अनेक मुश्किलों से निजात पाई जा सकती है। धनाभाव में अनेक मुश्किलों एवं पारिवारिक कलह का सामना करना पड़ता है। जिस कारण जिंदगी में खुशियों और सुखों का अभाव बना रहता है। धनाभाव में आत्मसम्मान का अभाव हो जाता है। धन के कारण समाज में आर्थिक विषमता का सामना करना पड़ता है। चित्रा मुद्गल ने अर्थ की महत्वता को स्पष्ट करते हुए बताया है कि वर्तमान काल में संघर्ष एक गंभीर समस्या बन चुकी हैं। जिस कारण मूलभूत जरूरतों की पूर्ति नहीं हो पा रही। इसके कारण कई समस्याएं उत्पन्न हो जाती हैं। इसका अनुमान आर्थिक संघर्ष करने वाले लोगों की दुर्दशा को देखकर लगाया जा सकता है।

निष्कर्ष: लेखिका का कथा साहित्य समाज को नई दिशा एवं विकास की ओर अग्रसर होने के लिए प्रेरित करता हुआ मानव जीवन एवं समाज के विभिन्न आयामों को प्रभावित करता हुआ दिखाई देता है। इस विकासशील देश में हाशिये पर स्थित लोगों की त्रासदी उनके माथे पर लगे बदनुमा धब्बे की तरह है, जिसे हम अपनी नजरों से ओझल नहीं कर सकते। सबसे महत्वपूर्ण मुद्दा है कि अब तक समाज के हाशिये से बाहर निकल न तो अपनी मुकम्मल अवस्था को छू सका है एवं न ही बुनियादी आवश्यकताओं को पूरा कर सका है एवं न ही मुख्यधारा की सदस्यता प्राप्त कर सुख-चैन का जीवन जी सका है।

संदर्भ सूची:

1. चित्रा मुद्गल, 'आदि-अनादि'-3 पृष्ठ 61
2. वही, 'आदि-अनादि'-2, पृष्ठ 219
3. वही, 'आदि-अनादि'-2, पृष्ठ 224
4. वही, 'आदि-अनादि'-1, पृष्ठ 104-105
5. वही, 'आवां', पृष्ठ 361
6. वही, 'पोस्ट बॉक्स नं. 203 नालासोपारा', पृष्ठ 75-76
7. वही, 'एक जमीन अपनी', पृष्ठ 24
8. वही, 'नकटौरा', पृष्ठ 114

• • •